दिसम्बर 28, 2011-जन्म ज्यंति पर विशेष

धीरूभाई अम्बाणी - एक चमकता सितारा

- परिमल नथवाणी

एक राष्ट्र के तौर पर हमें भारतीय अर्थतंत्र में व्यापक व ठोस प्रदान करने वाले वास्तविक सितारों को जानने-पहचानने का वक्त आ गया है। हम अक्सर राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव लाने वाले लोगों को नजर अंदाज कर देते हैं। धीरूभाई अम्बाणी इस किस्म का एक ऐसा नाम है जिनके कार्यों ने देश के आर्थिक और औद्योगिक विकास को नई दिशा प्रदान की। जिस रिलायन्स की धीरूभाई ने स्थापना की और उसे ऊंचाइयों तक पहुंचाया उसका मुद्रालेख 'वृद्धि ही जीवन' इसकी स्थापना से ही रहा है। हालांकि धीरूभाई अम्बाणी शेयर बाजार में जान फूंकनेवाले धुरंधर के रूप में काफी जाने गये हैं लेकिन उनकी औद्योगिक योजनाओं ने तो समूचे राष्ट्र को विश्व के मुख्य प्रवाह में ला खड़ा किया। टेक्षटाइल्स हो या फाइबर, पेट्रोलियम हो या पेट्रोकेमिकल्स, वे वैश्विक स्तर की योजनाओं के साथ आगे आये। इनके मोबाईल टेलिफोन की स्वप्नदर्शी योजनाने तो समूची समकालीन विचारधारा को ही बदल दिया। जो टेलिफोन एक समय कुछ खास लोगों का साधन था उसको धीरूभाई ने आम आदमी का बना दिया। वे परिवर्तन के प्रतिनिधि थे। वे किसी भी प्रक्रिया को गति प्रदान करने वाले उद्दीपक थे और विचारधारा में बदलाव का कारण थे।

कुछ समय से हम देख रहे हैं कि हम लोगों की विचारधारा को प्रसार-माध्यमों और बढ़ा-चढ़ाकर की गई मार्केटिंग तकनीकों ने प्रभावित किया है; और इनके जरिये राष्ट्र के सितारों के सम्मान की भूमिका तैयार हो रही हैं। प्रेस काउन्सिल ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष (निवर्तमान) न्यायाधीश श्री मार्कण्डेय कात्जु ने हाल ही में एक वाजिब मुद्दा उठाया कि भारत रत्न का मरणोपरांत खिताब भारत के सच्चे सितारों को दिया जाए। उन्होंने मिर्जा गालिब और शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की पैरवी की। नि:शंक दोनों विगत वर्षों के दिग्गज साहित्यकार रहे। गालिब एक विश्व प्रसिद्ध उर्दू कवि थे और शरतचन्द्र प्रसिद्ध बंगाली उपन्यासकार। ये दोनों साहित्यकार अपने साहित्य से जनमानस पर अमर और अमिट छाप छोड़ गये है।

धीरूभाई अम्बाणी और अन्य दूसरों ने भी अलग अलग क्षेत्रों में राष्ट्रीय जीवन में अपने बहुमूल्य प्रदान और सार्थक भूमिका के द्वारा अमिट छाप छोड़ी है। हालांकि सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान किसे दिया जाय यह तय करना सत्ताधीशों का काम है, लेकिन यह सम्मान मरणोत्तर भी दिया जा सकता है इस सिद्धांत को स्वीकारने में तो कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

यहां धीरूभाई अम्बाणी को यह सर्वोच्च सम्मान देने की कोई पेशकश नहीं है; लेकिन धीरूभाई अम्बाणी या उनके जैसे दूसरे सच्चे सितारों की भूमिका को लोगों के समक्ष रखना सत्ताधीशों , सांसदों, और प्रसार-माध्यमों का नैतिक फर्ज भी तो है।

कुछ समय पहले सरकारने धीरूभाई अम्बाणी के मरणोपरांत सम्मान में डाक टिकट जारी किया था। इस राष्ट्रीय सम्मान के अलावा भी धीरूभाई अब भी हजारों के दिलों की धड़कन बने हैं। वे वर्तमान में भी देश के कई उभरते और प्रस्थापित उद्योग साहसिकों के आदर्श हैं। वे कइयों के इस कदर रोल माडल बने हैं कि कुछ अनजान लोगों ने धीरूभाई अम्बाणी के नाम के मंदिर बना कर उन्हें भगवान के रूप में प्रस्थापित किया है।

यह समसामयिक बाबत है कि 28 दिसम्बर 2011 को धीरूभाई अम्बाणी की जन्म तिथि पर उनकी स्मृति में एक स्मारक का उद्घाटन होगा। जहां से उन्हों ने युवा साहसिक के तौर पर शरूआत की थी। उस गांव चोरवाड के उनके आवास को स्मृति भवन में तबदील किया गया है। धीरूभाई एडन (अब यमन) गये तब तक वहां रहे। देश के इस हिस्से में किसी उद्योगपति के नाम पर तैयार किया गया इस किस्म का यह पहला स्मारक है।

यह स्मारक भी अपने आप में सम्माननीय धीरूभाई अम्बाणी को भारत रत्न सरीखी श्रद्धांजलि ही तो है।

(श्री परिमल नथवाणी रिलायन्स इण्डस्ट्रीज लिमिटेड में कोर्पोरेट अफेर्स विभाग के ग्रुप प्रेसिडेन्ट और झारखण्ड से राज्य सभा सांसद हैं।)

★ ★ ★